उपग्रह जासूसी से छिपना मुश्किल होगा

शीत युद्ध के दौरान ऐसा कहते थे कि मॉस्को या वॉशिंगटन के किसी बगीचे में बैठकर अखबार पढ़ेंगे तो जासूस उपग्रह उसकी सुर्खियों को रिकॉर्ड कर लेंगे। यह कोरी गप है क्योंकि उस समय उपग्रह पर लगे उपकरणों की विभेदन क्षमता इतनी नहीं थी कि वे अखबार के दो अक्षरों को अलग-अलग देख सकें। बहरहाल यह बात सही है कि उपग्रह की आंखें आकाश से देखती तो थीं।

हालांकि शायद आज भी उपग्रह अखबार तो न पढ़ सकें मगर पहले से काफी साफ देख पाते हैं। उपग्रह से धरती के चित्र खींचना, भूमि उपयोग के पैटर्न देखना, जंगल की आग पर निगरानी रखना या नम भूमियों का सर्वेक्षण करना जैसी बातें तो आम बात हो गई हैं। तूफानों से जान-माल की रक्षा करने में तो उपग्रहों ने हाल के दिनों में जो मदद की है वह सर्वविदित है। और इनका उपयोग जासूसी के लिए भी किया जाता है। इस काम में ड्रोन विमान भी इनकी मदद कर रहे हैं। और तो और, अब निजी कंपनियां भी इस काम में हाथ बंटा रही हैं।

विश्व की पहली अंतरिक्ष जासूसी कंपनी एयर एंड स्पेस एविडेंस लंदन में स्थापित हो गई है। युनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन के अंतरिक्ष इमेजिंग विशेषज्ञ रेमंड हैरिस और अंतरिक्ष अधिवक्ता रेमंड पर्डी ने मिलकर इस कंपनी की स्थापना की है यह मुकदमों के लिए प्रमाण जुटाने के लिए उपग्रहों और ड्रोन से प्राप्त तस्वीरों का उपयोग करेगी।

उपग्रह (या यों कहें कि सुदूर जासूसी) के संदर्भ में सार्वजनिक बहस बहुत कम हुई है। वैसे आजकल कानूनी हलकों में यह एक चर्चित विषय है। आकाश से खींची गई तस्वीरों को बतौर साक्ष्य प्रस्तुत किया जाने लगा है।

यह काफी चिंताजनक स्थिति है। घर से बाहर आप जो कुछ भी करते हैं उस पर आसमानी निगाहें टिकी हुई हैं। और अब तो इंफ्रारेड इमेजिंग के ज़रिए घर की गोपनीयता भी भंग होने को है। आसमानी नज़रों को छोड़िए सीसीटीवी ने हर चौराहे, सड़क, बगीचे को हमेशा के लिए प्रेक्षित बना दिया है। मगर इन चीज़ों पर समाज में चिंता न होना अजीब बात है। खासतौर से आकाश में चक्कर काटते उपग्रह और ड्रोन से सूचनाएं प्राप्त करके हमारे खिलाफ इस्तेमाल करना तो हमारे मानव अधिकारों का उल्लंघन है। ***(स्रोत फीचर्स)***